विकल्प

बुधवार, 19 अगस्त 2026

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के विद्यार्थियों का प्रायोगिक पत्र

3 मेधावी छात्र सम्मानित

मुख्यमंत्री ने मेधावी छात्राओं परिधि पुजारी, तमन्ना लश्कर और शिविका गुप्ता को उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया।

Fake news नहीं नेक न्यूज लिखें

भोपाल. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय के सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय में मुख्यमंत्री व विवि महापरिषद के अध्यक्ष डॉ. मोहन यादव ने पत्रकारिता के क्षेत्र में 'फेक न्यूज' के बजाय 'नेक न्यूज' को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पत्रकार सत्ता के आलोचक हो सकते हैं, लेकिन देशहित का ध्यान रखना प्रत्येक पत्रकार का प्राथमिक कर्तव्य होना चाहिए। लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार, गायक और अभिनेता पीयूष मिश्रा विशिष्ट अतिथि थे। इसके पहले कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने विश्वविद्यालय की प्रगति का ब्यौरा साझा किया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की 36 वर्षों की यात्रा के अवसर पर इस वर्ष एक नया प्रयोग किया गया है, जिसके तहत देश-दुनिया के विभिन्न मीडिया संस्थानों में कार्यरत 50 प्रतिष्ठित पूर्व विद्यार्थियों को आमंत्रित किया गया है।

विश्वविद्यालय की 36 वर्षों की यात्रा में किसी विद्यार्थी का आपस में 36 का आँकड़ा नहीं है। उनमें परस्पर प्रेम बरकरार है।

मीडिया की ताकत का एहसास हज़ारों वर्षों से होता आया है। महर्षि वाल्मीकि ने लव-कुश के माध्यम से राम के स्वर्णिम पक्षों को अयोध्यावासियों के सामने गाकर प्रस्तुत कराया।

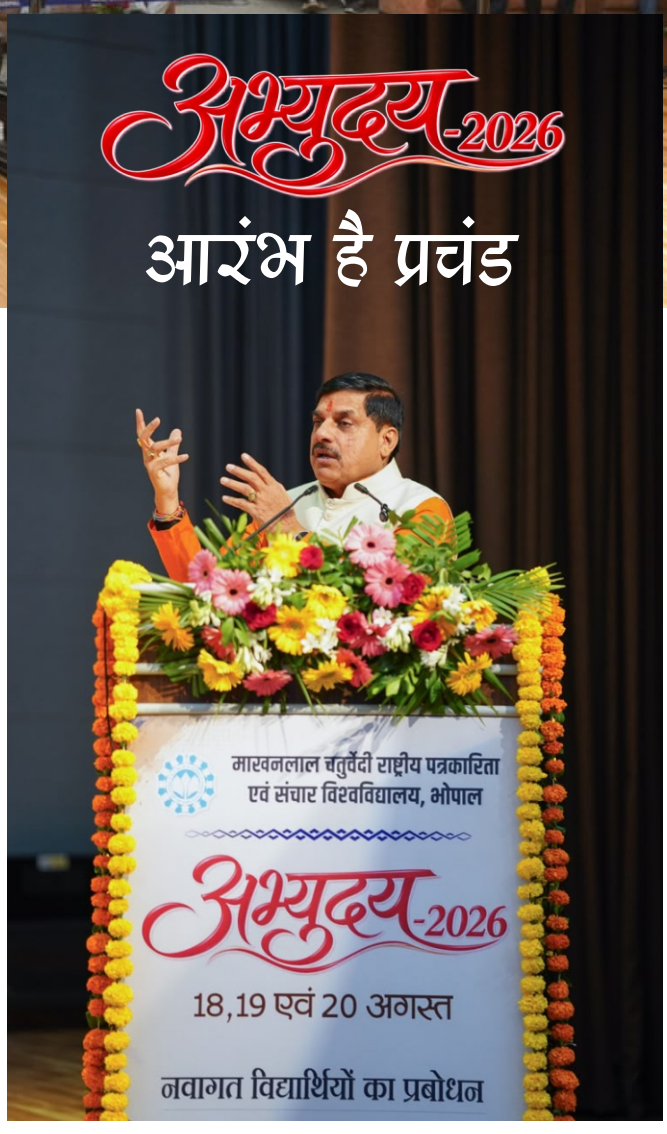

कुछ तो सपने पालो यार

पीयूष मिश्रा के दिल की बात

नकारात्मकता से दूर रहे : कुलगुरु

तीन प्रकाशनों का विमोचन

■ **कुलगुरु श्री विजय मनोहर तिवारी** ने विद्यार्थियों को नकारात्मकता से दूर रहने की सलाह दी । आप किसी की मदद नहीं कर सकते तो किसी के काम में बाधा भी नहीं बनिए। आप शकुनि और मंथरा से सीख सकते हैं कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

कुलसचिव डॉ. पी. शशिकला ने आभार व्यक्त किया।

■ **हिंदी पत्रकारिता** के 200 वर्षों के इतिहास पर केंद्रित पुस्तक 'दो सदी साक्षी', पत्रकारिता विभाग के प्रायोगिक समाचार पत्र 'विकल्प' के इंटर्नशिप विशेषांक और मीडिया प्रबंधन विभाग की भारत की 'टेंपल इकोनॉमी' पर केंद्रित मैगजीन 'इंडियन कैलिडोस्कोप' का विमोचन किया गया।

संचालन वरिष्ठ पत्रकार पदम प्रसाद भंडारी ने किया।

समस्या भी मीडिया समाधान भी मीडिया

देश की सबसे बड़ी समस्या के सवाल पर पीयूष मिश्रा ने जवाब दिया - "मीडिया।" उन्होंने कहा कि अगर मीडिया निष्पक्ष होकर और जिम्मेदारी के साथ अपना काम करे, तो देश की आधी समस्याएं ऐसे ही खत्म हो सकती हैं। दरअसल, एमसीयू के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने उनसे पूछा था कि देश की सबसे बड़ी समस्या उन्हें क्या दिखाई देती है। पीयूष मिश्रा ने मीडिया की जिम्मेदारी पर जोर देते हुए कहा कि पत्रकारिता सच्चाई, निष्पक्षता और जिम्मेदारी के साथ अपनी भूमिका निभाए, तो समाज में बड़ा बदलाव आ सकता है।

युवाओं को विवेकानंद की विचारधारा को आत्मसात करना चाहिए

आज के युवा बहुत तेज हैं और उनके पास संसाधनों की कोई कमी नहीं है। यदि उन्हें सही दिशा मिल गई, तो वे बहुत सही जगह पहुँचेंगे लेकिन दिशाहीन होने पर वे गलत रास्ते पर भटक सकते हैं।

लेफ्ट ने मुझे बहुत दिया, फिर लिया भी बहुत। 2014 में नरेंद्र मोदी के काम ने प्रभावित किया और मेरी सोच बदली। अब 2026 में विवेकानंद और अरविंद घोष मेरे जीवन में नए विचार लेकर आए।

दुनिया उन्हीं लोगों को आत्मसात करती है, जो 'एक्स्ट्राऑर्डिनरी' होते हैं। अगर आप मीडिया के क्षेत्र में हैं और एक सफल मुकाम बनाना चाहते हैं, तो आपको मीडिया में भी 'एक्स्ट्राऑर्डिनरी' बनना पड़ेगा। सिर्फ भीड़ में शामिल होकर पहचान नहीं बनती, अपनी अलग जगह बनाने के लिए अपने काम में 'विलक्षण ' होना जरूरी है।

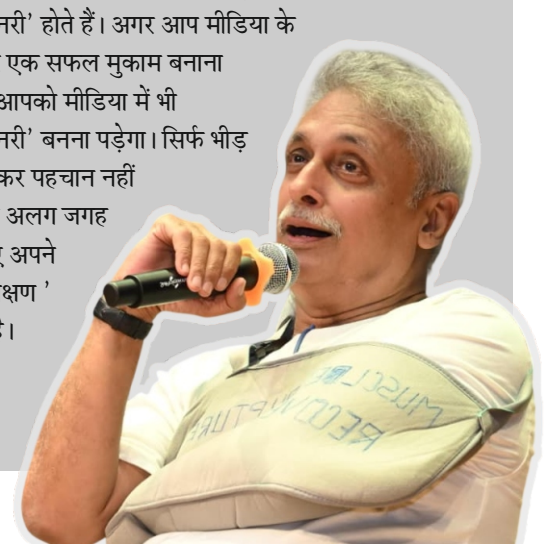

डॉ. विश्वेश ठाकरे, मैनेजिंग एडिटर IBC24 (मप्र छग) ने अपने संघर्ष और सफलताओं के अनुभव साझा किये। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता के विद्यार्थियों को शुरुआती दिनों से ही अपने कैरियर की दिशा तय कर लेनी चाहिए। यदि आप प्रिंट, टीवी ऐंकरिंग एवं डिजिटल में जाना चाहते हैं उसके लिए आवश्यक कौशल सीखने चाहिए।

प्रसिद्ध उद्घोषक व खेल कमेंटेटर पदम प्रसाद भंडारी ने कहा कि सरकार 5 सालों में एक बार चुनी जाती है परंतु मीडिया को आज़ादी है कि वह बता सके कि क्या गलत हो रहा है और उसे कैसे ठीक किया जा सकता है। मीडिया में व्यक्तिगत फायदों को अधिक महत्व देने से उसकी प्रभावशीलता कुन्द होती जा रही है। विद्यार्थी ईमानदारी, निष्ठा और लगन से अपना काम करते रहेंगे, तो पैसा और शोहरत उनके पीछे आएंगे।

शिल्पा अग्रवाल,संस्थापक, द हैप्पी स्लेट ने बताया कि मेरी रुचि पढ़ाई के दौरान ही लेआउट (डिजाइनिंग और क्रिएटिव) की तरफ बढ़ने लगी थी। जनसंचार की छात्रा होने के बावजूद मैंने डिजाइनिंग के क्षेत्र में भी काम करने की कोशिश की । इसी दौरान मुझे 'द हिंदुस्तान टाइम्स ' जैसे बड़े अखबार के साथ डिजाइन के क्षेत्र में काम करने का मौका मिला ।

प्रथम सत्र

PR प्रोफेशनल विकास सिंह ने कहा कि कुछ चीज़ें इसलिए कर पाया क्योंकि मैं बागी था। घिसी पिटी लकीर पर चलने के बजाय उस बात को महत्व देता हूँ जिसकी वास्तव में जरूरत होती है। उन्होंने छात्रों से खास तौर पर 'ना' कहने की ताकत सीखने की बात कही। उन्होंने कहा कि आज के Gen Z में यह खूबी है, लेकिन इसका इस्तेमाल सही तरीके और सलीके से करना जरूरी है। उन्होंने अलग अलग मीडिया माध्यमों के बीच के अंतर को उदाहरण के जरिए समझाया। झारखंड से PR तक का सफर उनके लिए आसान नहीं था लेकिन यह उनका सपना था। परिवार चाहता था कि वे इंजीनियर या डॉक्टर बनें लेकिन उनकी रुचि मीडिया में थी। उन्होंने अपने पिता को समझाया और मीडिया की पढ़ाई शुरू की।

50 विद्यार्थी ऐसे चाहिए जो हमसे बेहतर पत्रकार बनें

सीनियर एसोसिएट एडिटर इंडियन एक्सप्रेस श्यामलाल यादव ने विद्यार्थियों से अपने पेशे को सम्मान दिलाने का आह्वान किया। यादव ने कहा कि पत्रकारिता में कहानी यूं ही नहीं पकती, इसके लिए काफी काम करना पड़ता है। उन्होंने पत्रकारों को लेकर समाज में बनी धारणा पर सवाल उठाते हुए कहा कि पुलिस, आईएएस और नेताओं से बात करने पर भी पत्रकार को भ्रष्ट कहा जाता है।

इसके बावजूद उन्होंने सवाल रखा कि यदि देर रात किसी महिला को मदद की जरूरत हो और आसपास लोकतंत्र के चारों स्तंभ मौजूद हों, तो वह सबसे पहले किसके पास जाएगी? उनके अनुसार वह अखबार के दफ्तर का रुख करेगी क्योंकि आज भी अखबार के दफ्तरों पर भरोसा कायम है।

उन्होंने कहा कि पत्रकारों को अपने पेशे को सम्मान दिलाने और इसकी जिम्मेदारी को संभालकर रखना होगा। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि विश्वविद्यालय में हो रही पढ़ाई अपनी जगह है , असली चुनौती फील्ड में काम करने से तय होगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि 500 विद्यार्थियों में से कम से कम 50 ऐसे निकलें, जो इन चुनौतियों का सामना करते हुए बेहतर पत्रकार बनें।

द्वितीय सत्र

अश्विनी मिश्रा
ग्रुप क्रिएटिव एडिटर
बीबीडीओ मुद्रा

बदलाव की शुरुआत हमेशा स्वयं से करनी चाहिए; दुनिया को बदलने से पहले खुद को बदलना ज़रूरी है। हमारी विचारधाराएं अलग हो सकती हैं, लेकिन व्यक्तिगत मतभेद नहीं होने चाहिए। किसी भी व्यक्ति का मूल्य उसके 'कर्म' से तय होता है, इसलिए अपने काम के प्रति जिम्मेदार और ईमानदार रहें। मेरा इस विश्वविद्यालय से जुड़ाव वर्ष 2013 में हुआ था और यहाँ मिले अनुभवों ने मेरे व्यावसायिक जीवन को दिशा दी है।

निशा थारानी
क्रिएटिव डायरेक्टर
एंड प्रोड्यूसर

रचनात्मकता केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह अपनी सोच को एक नई दिशा देने का सशक्त माध्यम है। यह विश्वविद्यालय आपका सम्मान है। अनुभव बढ़ने के साथ ही आप बड़ी सफलता की ओर अग्रसर होंगे। इस क्षेत्र में मेरी सफलता का सबसे बड़ा श्रेय विश्वविद्यालय से जारी किए गए उस पत्र को जाता है, जिसे लेकर मैं मुंबई गई और मुझे अपनी पहली इंटर्नशिप मिली। मेरा सफर 'आहट' और 'फियर फाइल्स' जैसे शोज से शुरू होकर आज पॉकेट एफएम के वरिष्ठ पद तक पहुँचा है।

डॉ. हृदय गुप्ता
संस्थापक, द राइट पी आर

पीआर की दुनिया में कोई 'थंबरुल' नहीं होता; यहाँ हर दिन नई चुनौतियाँ आती हैं। आज सबसे अधिक पैसा पीआर के क्षेत्र में है और एआई के आने से अगले 10 वर्षों में इस क्षेत्र की आय 10 गुना तक बढ़ जाएगी। यह विश्वविद्यालय आपको 'जीवन की कोई भी फ्लाइट उड़ाने का लाइसेंस' देता है, जिससे आप फील्ड की हर मुश्किल के लिए तैयार हो जाते हैं। इस फील्ड में वही सफल होते हैं जो कुछ अलग करने और सीखने की ललक रखते हैं।

धर्मेंद्र भदौरिया
नेशनल पॉलिटिकल एडिटर, दैनिक भास्कर

मुझे याद है जब हमने 'विकल्प' समाचार-पत्र की शुरुआत की थी, जिससे हमें रिपोर्टिंग और लेखन की बारीकियां सीखने को मिलीं। हिंदी पत्रकारिता 'उदंत मार्तंड' से शुरू होकर आज 24 सेकंड में खबर पहुँचाने के दौर में आ गई है, लेकिन तीन चीजें कभी नहीं बदलेंगी—सत्य, तथ्य और कृत्य। इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए सवाल पूछने होंगे।

डॉ. अंकिता मिश्रा
सीनियर एडिटर, एनएसडीसी

करियर की राह हमेशा सीधी नहीं होती। आप जो भी काम करें, उसे पूरे मन से करें । आज सूचनाओं का 'टाइम स्पैन' 24 घंटे से घटकर महज 24 सेकंड रह गया है वहीं एआई के इस दौर में भी विश्वसनीयता के लिए लोग प्रिंट मीडिया पर ही सबसे ज्यादा भरोसा करते हैं।

सच क्या है, उस तक कैसे पहुँचा जाए, उसे कैसे प्रस्तुत किया जाये

एक पत्रकार में अदम्य जिज्ञासा होनी चाहिए

तृतीय सत्र में अजय उपाध्याय, अचिंद्र भटनागर, सिद्धार्थ मुखर्जी, आदित्य श्रीवास्तव और पराक्रम सिंह शेखावत ने नवागत विद्यार्थियों को संबोधित किया।

पीआईबी भोपाल के असिस्टेंट डायरेक्टर **अजय उपाध्याय** ने कहा कि पत्रकारिता की इस एक डिग्री की बदौलत जीवन में 360 डिग्री घूमने और विभिन्न क्षेत्रों में काम करने का अवसर मिला। इसी डिग्री की बदौलत सरकारी नौकरी भी मिली। हम विश्वविद्यालय में केवल डिग्री हासिल करने के लिए नहीं आते, यहाँ से बहुत कुछ हासिल करते हैं।

दूरदर्शन भोपाल के वरिष्ठ पत्रकार **आदित्य श्रीवास्तव** ने कहा कि यहाँ मैंने सीखा कि पत्रकार वह नहीं होता, जो सिर्फ़ पत्रकारिता करता है। पत्रकार वह होता है, जो दुनिया को जानना चाहता है। पत्रकार को सबसे पहले जानना चाहिए कि सत्य क्या होता है? सत्य तक कैसे पहुँचा जाए? लोगों के सामने सत्य को कैसे बताया जाए?

सॉफ़्टवेयर इंजीनियर **सिद्धार्थ मुखर्जी** ने कहा कि जब मैं विश्वविद्यालय आया था, तब मुझे कंप्यूटर या टेक्नोलॉजी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उन्होंने कहा कि संघर्ष के दिनों में महज़ 4,000 रुपये की तनख़्वाह में भी काम किया। छात्रों से उन्होंने कहा कि आपको आत्मनिर्भर बनना है और तय करना है कि आपको किस रास्ते पर आगे बढ़ना है।

प्रिंसिपल सॉफ़्टवेयर इंजीनियर **अचिंद्र भटनागर** ने छात्रों से कहा कि मैंने सीखा है कि उन लोगों के साथ भी साझा आधार कैसे तलाशना है, जो आपसे सहमत नहीं होते। जब हम मिलकर काम करते हैं, तो यह हमारे लिए बहुत-सी चीज़ों को बदलने और बेहतर बनाने की क्षमता रखता है।

डीडी न्यूज़ दिल्ली के एंकर-सह-संवाददाता **पराक्रम सिंह शेखावत** ने कहा कि पत्रकारिता में आपका हथियार आपका ज्ञान है। यही हथियार आपको सफलता दिलाएगा। उन्होंने कहा कि आप सभी को अपना आत्मविश्वास बनाए रखना है और स्वयं को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए। टीवी जगत के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि आपके पास इतना ज्ञान होना आवश्यक है कि एंकरिंग करते वक्त टेलीप्रॉम्प्टर पर आश्रित न रहें। टेलीप्रॉम्प्टर रुक जाएगा, तब आपका ज्ञान ही काम आएगा। सत्र का संचालन अक्षय और ख़ुशी ने किया।

अभ्युदय : आज के वक्ता

चतुर्थ सत्र 10:30–12:00 बजे
पंकज झा, रवि मिश्रा, दुर्गेश सिंह, प्रसून मिश्रा, मीनाक्षी शर्मा, अजीत झा

पंचम सत्र 12:00–1:30 बजे
ओमप्रकाश रजक, नील रुद्रजीत मुखर्जी, सुधांशु शेखर, मिताली उपाध्याय, ललित कुमार

छठा सत्र 2:30–4:00 बजे
आनंद पांडेय, सुशील अग्रवाल, अपर्णा झा, सुमित पांडेय, शिखा शर्मा

सातवां सत्र 4:00–5:30 बजे
अरविंद दुबे, दीपक पगारे, अविनाश सोमकुंवर, आलोक परिहार

जब नेताजी का भाषण तत्काल बदलना पड़ा

विनम्र तिवारी
जनसंचार विभाग, 5BAMC

पॉलिटिकल पीआर के क्षेत्र में कई अप्रत्याशित घटनाएँ घटित होती हैं, जिनके उपरांत हमें बहुत कम समय में त्वरित गति से काम करना पड़ता है। इसका एक वाकया मुझे याद आता है। मध्य प्रदेश विधानसभा की एक वरिष्ठ महिला सदस्य हैं, जिनके लिए मैंने एक विशेष सत्र से पूर्व शाम को भाषण लिखकर दिया था। अगले दिन विधायक दल की बैठक मुख्यमंत्री निवास पर हुई। उसके बाद मुझे बताया गया कि बैठक में उनका विषय बदल दिया गया है। यह फोन सुबह साढ़े दस बजे आया था और ग्यारह बजे उन्हें सदन की कार्यवाही में सम्मिलित होना था। निर्देश था कि भाषण बीस मिनट पहले भेजना है, जिससे सदन की कार्यवाही शुरू होने से पहले ही वे भाषण पढ़ सकें। चूँकि आप सभी को पता है कि सदन के अंदर लोग फोन वगैरह का कम इस्तेमाल करते हैं, इसलिए मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती थी कि दस मिनट के अंदर उस भाषण को पुनः लिखना और उससे संबंधित विषय पर सरकार के आँकड़े निकालना। यह चुनौतीपूर्ण काम मैंने 15 से 18 मिनट में पूरा कर लिया, जिसके बाद यह कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो गया। तो कई बार कुछ ऐसी अप्रत्याशित घटनाएँ हमारी कार्यशैली की परीक्षा लेती हैं। हालाँकि, इस दौरान बहुत कुछ सीखने का भी अवसर मिलता है।सोशियो कम्युनिकेशन में यह मेरी पहली इंटर्नशिप शुरू की। काम के दौरान मध्य प्रदेश की राजनीति के समीकरण, सरकार की कार्यप्रणाली और राजनीतिक गलियारों में चल रहे विभिन्न विषयों का अध्ययन कर उन्हें समझने की शुरुआत हुई। इस प्रकार राजनीतिक जनसंपर्क और नैरेटिव बिल्डिंग, या कहें तो पॉलिटिकल पीआर के क्षेत्र में बतौर इंटर्न सीखने का सिलसिला शुरू हुआ। इस विश्वविद्यालय में अध्ययन के साथ-साथ इस संस्था में हाइब्रिड मोड में कार्य करते हुए सीखने का सिलसिला भी जारी है। इस दौरान राजनीतिक जनसंपर्क से जुड़े विभिन्न आयामों की बेहतर समझ विकसित हुई है। साथ ही, संवाद की अन्य विधाओं को सीखने का क्रम भी जारी है।

राजनीति के भीतर झांकने का मौका

केवली कबीर जैन
जनसंचार विभाग, 5BAMC

वराहे एनालिटिक्स में काम करना मेरे लिए प्रयोगशाला जैसा है। नीति अनुसंधान एवं विश्लेषण, राजनीतिक विकास, चुनाव प्रबंधन और राजनीतिक जनसंपर्क जैसे क्षेत्रों के साथ काम करते हुए मुझे राजनीति के भीतर चलने वाली प्रक्रियाओं को समझने, परखने और प्रभावित करने की कार्यप्रणाली को करीब से देखने का अवसर मिला। यहाँ मेरा मुख्य काम नैरेटिव को देखना, समझना परखना फिर गढ़ना और उसको बढ़ाना है। जिसमें समाचारों के बीच छिपे पैटर्न को समझकर, किसी घटना के अलग-अलग अर्थों को पहले स्वयं समझना फिर दूसरों को समझाने के लिए उसे सरल करना, और देखना कि समाज किसी विषय को किस दृष्टि से देख रहा है और फिर उस दृष्टिकोण को संप्रेषण के माध्यम से आकार देना। या फ़िर यूँ कहें कि कटी-छठीं , मैन्युफैक्चर्ड बातें इंटरनेट कम्युनिटी से मनवाना। यहां काम करना मेरे लिए जीवंत प्रयोगों की पाठशाला बन कर आया। मैंने यहां सीखा कि राजनीति में तथ्य और नैरेटिव दो अलग-अलग संसार नहीं हैं। तथ्य अपनी जगह मौजूद रहते हैं, लेकिन उनकी व्याख्या और प्रस्तुति यह तय करती है कि समाज उन्हें किस रूप में देखेगा और समझेगा। एक ही घटना अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ टटोलती है। इसलिए नैरेटिव का अध्ययन “क्या हुआ”, को समझने के साथ यह भी है कि “लोग उसे किस रूप में समझ रहे हैं और क्यों समझ रहे हैं।”

'अभ्युदय' का अमृतपान

मंच से करियर और जिंदगी के कई किस्से सुनने को मिले। छात्रों ने इन्हें अपने भविष्य से जोड़कर सुना। कई बातें लंबे समय तक याद रहने वाली हैं।

कभी इसी विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले मंच पर थे। अपने सफर की बातें विद्यार्थियों से साझा कीं। पुराने अनुभवों से नई राह के मंत्र मिले।

विद्यार्थियों की नजरें मंच पर थीं और मन में कई सवाल। हर वक्ता की बात में कुछ नया सुनने को मिला। किसी ने करियर की बात समझी, किसी ने जिंदगी की।

डायरी में नोट्स...
करियर मंत्र मिले तो नोट्स बनाकर सहेज लिया।

सुना, समझा और सीखा
करियर सूत्र जो पूरी जिंदगी काम आएंगे।

हाथों में 'विकल्प'
इंटर्नशिप की कहानियां, आगे बढ़ने की राह।

रिपोर्टिंग टीम: आशीष प्रताप सिंह, वेदश्री कुलकर्णी, छवि बाथम, चंद्रभान हिरवानी, मेहक केवट, अनुष्का पांडेय, झरना सोनी, समृद्धि दुबे, अनन्या तिवारी, सृष्टि राय, कशिश, प्रियंका लोधी, मल्लिका, टीना यादव,
विद्यार्थी संपादक मंडल: अभिषेक जाट, विनम्र तिवारी , सुप्रजा आर्या पांडेय, केवली जैन, केशव कुशवाह **समन्वयक:** डॉ. राखी तिवारी
सलाहकार संपादक: प्रो. शिवकुमार विवेक, डॉ.लाल बहादुर ओझा, डॉ. ऋतु मिश्र, विनय श्री नेमा **रिपोर्टिंग समन्वयक :** रूबी सरकार, रोशनी शर्मा **लेआउट:** आकाश सैनी, अवनि सक्सेना, शैलेश यादव

प्रधान संपादक: विजय मनोहर तिवारी
publication.mcu@gmail.com